डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता

सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

वैज्ञानिक प्रबंध का अध्ययन

[Study of scientific management]

वैज्ञानिक प्रबंध का अध्ययन

प्रस्तावना

1909 में, सिद्धांतकार फ्रेडरिक विंसलो टेलर ने अपनी पुस्तक 'द प्रिंसिपल्स ऑफ साइंटिफिक मैनेजमेंट' प्रकाशित की, जहां उन्होंने प्रस्तावित किया कि नौकरियों को सरल और अनुकूलित करके उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने एक वैज्ञानिक तर्क भी दिया कि यदि श्रमिकों और प्रबंधकों के बीच सहयोगात्मक संबंध हो तो उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। इस सिद्धांत के प्रकाशित होने से पहले, व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्य संस्कृति और कार्य भिन्न-भिन्न थे। उदाहरण के लिए, फ़ैक्टरी प्रबंधकों का श्रमिकों के साथ न्यूनतम संपर्क था; कार्य संस्कृति में कोई प्रेरणा और मानकीकरण नहीं था। इसलिए, काम करने के लिए कोई प्रोत्साहन और दक्षता नहीं थी। लेकिन टेलर को लोगों को प्रेरित करने और अक्षमता को कम करने में बहुत रुचि थी। यह लेख टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन के सिद्धांत और टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन सिद्धांतों पर संक्षेप में चर्चा करेगा। यह टेलर के प्रबंधन सिद्धांत और इसकी आलोचनाओं में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर

भी ध्यान केंद्रित करेगा।

1. वैज्ञानिक प्रबन्ध का अर्थ (Meaning of Scientific Management):

वैज्ञानिक प्रबन्ध दो शब्दों का योग है- विज्ञान तथा प्रबन्ध । 'विज्ञान' शब्द में 'वि' का अर्थ अधिक अथवा विशिष्ट से है और ज्ञान का अर्थ जानकारी से है । इस प्रकार 'विज्ञान' का अर्थ विशिष्ट जानकारी अथवा ज्ञान की अभिवृद्धि से है जो नये प्रयोगों द्वारा हमारे सामान्य ज्ञान में जुड़ जाती है ।'प्रबन्ध' किसी कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने की क्रिया को कहते हैं । इन दोनों शब्दों के समावेश से एक नये शब्द का बोध होता है 'लक्ष्य' । किसी भी कार्य को अभिवृद्धित ज्ञान के साथ सुव्यवस्थित रूप से चलाने की आवश्यकता तभी अधिक पड़ती है जब हमारे सामने कोई निश्चित लक्ष्य हो और हम उसकी अनुकूल प्राप्ति करना चाहते ही ।

इस प्रकार 'वैज्ञानिक प्रबन्ध' से आशय किसी भी कार्य को अभिवृद्धित ज्ञान की सहायता से योजनाबद्ध तरीके से किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सुव्यवस्थित रूप से चलाने से है ।

2. वैज्ञानिक प्रबन्ध की परिभाषाएँ (Definition of Scientific Management):

वैज्ञानिक प्रबन्ध को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न रूपों एवं अर्थों में परिभाषित किया है ।

कुछ प्रमुख परिभाषाएँ इस प्रकार हैं:

एच.एस.पर्सन (H.S. Person) के अनुसार- "वैज्ञानिक प्रबन्ध से आशय ऐसे संगठन से है जो वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा विश्लेषण द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों तथा नियमों पर आधारित हो न कि मनमाने तौर पर या परम्परागत त्रुटि सुधार प्रणाली के आधार पर ।"एफ.डब्ल्यू.टेलर (F.W. Taylor) के अनुसार- "वैज्ञानिक प्रबन्ध आपके यह जानने की कला है कि आप लोगों से यथार्थ में क्या कराना चाहते है तथा यह देखना चाहते हैं कि वे उसको सुन्दर से सुन्दर तथा मितव्ययतापूर्ण ढंग से कैसे करें ।"

पी.एफ.ड्रकर (P.F. Drucker) के अनुसार- "वैज्ञानिक प्रबन्ध का तात्पर्य कार्य का संगठित अध्ययन कार्य का सरलतम भागों में विश्लेषण और प्रत्येक भाग का श्रमिक द्वारा श्रेष्ठ प्रकार से निष्पादन हो सके इसके लिए व्यवस्थित सुधार करना है ।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर सरलतम शब्दों में यह कह सकते हैं कि 'वैज्ञानिक प्रबन्ध' प्रबन्धकीय समस्याओं के हल का वह मानवीय दृष्टिकोण है जो कि वैज्ञानिक अनुसन्धान तथा विश्लेषण से प्राप्त नियमों, सिद्धान्तों स्व परिणामों पर आधारित होता है और जिसका उद्देश्य न्यूनतम व्यय पर अधिकतम लाभों की प्राप्ति करना होता है ।

3. वैज्ञानिक प्रबन्ध के लक्षण या विशेषताएँ (Characteristics or Features of Scientific Management):

i. निश्चित लक्ष्य एवं योजना:

प्रबन्धक के पास जो पहले से निश्चित लक्ष्य उपलब्ध होते है, उन्हें प्राप्त करने के लिए आवश्यक साधन कैसे जुटाये जायें साधनों का कैसे प्रयोग किया जाये तथा न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन हेतु कौन-कौन सी विधियाँ संभव है आदि के लिए योजना का अग्रिम निर्माण करना होता है ।

ii. वैज्ञानिक विश्लेषण तथा प्रयोग:

लक्ष्य प्राप्ति के लिए योजना तथा योजना का आधार लक्ष्य होते हैं

। विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण करना तथा विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को प्रयोग करके उनके गुण-दोष जाँचना वैज्ञानिक प्रणाली है ।

वैज्ञानिक प्रबन्ध में योजना का प्रायोगिक महत्व, उपयोगिता तथा उपलब्ध परिस्थितियों में उसकी उपयुक्तता जाँचने के पश्चात ही योजना का क्रियान्वयन किया जाता है ।

iii. सुनिश्चित नियम:

विश्लेषण तथा प्रयोग के पश्चात उपयुक्त ठहराये गये निष्कर्षों को क्रियान्वित करने के लिए नियम बनाये जाते हैं । नियमों का पालन प्रत्येक कर्मचारी के लिए आवश्यक होता है जिससे अनुशासन बना रहे । नियमों का प्रयोग सामूहिक रूप से किया जाना चाहिए

iv. मितव्ययता:

वैज्ञानिक प्रबन्ध का आधार ही मितव्ययता है । साधनों के अपव्यय को कम करने के लिए सूझबूझ पूर्ण आयोजन, योजना का सफल क्रियान्वयन, अनुशासन तथा अच्छे नियोक्ता-कर्मचारी संबंध आवश्यक है । सहयोग मितव्ययता की कुंजी है ।

v. अनुसन्धान में निरन्तरता:

वैज्ञानिक प्रबन्ध, सुधरी हुई क्रियाओं का प्रबन्ध में प्रयोग है । अतः इसे जीवित रखने के लिए आवश्यक है कि समयानुसार अध्ययन किया जाता रहे । अनुसन्धान एवं शोष में निरन्तरता के बिना वैज्ञानिक प्रबन्ध सफल नहीं हो सकता क्योंकि औद्योगिक वातावरण व समाज कभी जड़ नहीं हो सकता ।

vi. सामूहिक हित के लिए सामूहिक प्रयास:

कार्य विभाजन, बड़े पैमाने पर उत्पादन, सामूहिक कार्य आदि वैज्ञानिक प्रबन्ध के प्रतीक है । वैज्ञानिक प्रबन्ध के अन्तर्गत प्रबन्धक का कार्य सभी कर्मचारियों में टीम भावना उत्पन्न करना है तथा उन्हें लक्ष्य प्राप्ति के लिए सामूहिक रूप से प्रेरित करना है।

4. वैज्ञानिक प्रबन्ध के उद्देश्य (Objects of Scientific Management):

वैज्ञानिक प्रबन्ध, प्रबन्ध क्षेत्र की समस्याओं को हल करने के लिए अपनाया गया एक ऐसा वैज्ञानिक दृष्टिकोण है जिसके प्रमुख उद्देश्य डॉ. जोन्स के अनुसार निम्नलिखित हैं:

i. कार्य की सभी क्रियाओं में अधिक दक्षता की दृष्टि से प्रशिक्षित

व्यक्ति उपलब्ध कराना ।

ii. उपकरण कच्ची सामग्री कार्य विधि तथा कार्य दशा में सुधार और मानकीकरण करना ।

iii. कार्य विन्यास, मार्ग निर्धारण, समय-क्रम निर्धारण उत्पादकीय सामग्री का नियोजन क्रम भण्डारण तथा लेखा विधियों में सुधार करना ।

iv. संस्थानों तथा विभागों में समन्वय स्थापित करना और उस पर पर्याप्त नियन्त्रण रखना जिससे कार्य-विलम्ब त्रुटियां दुर्घटना तथा कार्य के प्रति उपेक्षा कम हो सके ।

v. सामयिक प्रशिक्षण निरन्तर मार्गदर्शन और तत्काल पुरस्कार की व्यवस्था करना ।

5. वैज्ञानिक प्रबन्ध के लाभ (Advantages of Scientific Management)

टेलर ने वैज्ञानिक प्रबन्ध से होने वाले लाभों के संबंध में कहा है कि वैज्ञानिक प्रबन्ध का सामान्य अनुकरण औद्योगिक कार्यों में लगे व्यक्तियों की औसत उत्पादकता को भविष्य में दुगुना कर देगा । टेलर का उपरोक्त कथन वैज्ञानिक प्रबन्ध को उत्पादकों/

नियोक्ताओं श्रमिकों उपभोक्ताओं और राष्ट्र सभी के लिए एक वरदान मानता है ।

इस प्रबन्ध व्यवस्था से प्रत्येक वर्ग को होने वाले लाभ इस प्रकार हैं:

I. **उत्पादकों/नियोक्ताओं को लाभ:**

वैज्ञानिक प्रबन्ध से सर्वाधिक लाभ उत्पादक/नियोक्ता को होता है:

(i) साधनों का पूर्ण उपयोग;

(ii) उत्पादन में मितव्ययता;

(iii) औद्योगिक संबंधों में सुधार तथा शांतिपूर्ण वातावरण;

(iv) वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार;

(v) पर्यवेक्षण व नियंत्रण लागत कम;

(vi) श्रमिकों की कुशलता में वृद्धि;

(vii) श्रम-विभाजन के लाभ;

(viii) प्रतियोगिता के लिए सक्षम;

II. **श्रमिकों को लाभ:**

(i) रुचि का कार्य उपलब्ध होना;

(ii) कार्य क्षमता वृद्धि के लिए प्रशिक्षण की सुविधा;

(iii) प्रगति के उचित अवसर;

(iv) उपयुक्त मजदूरी एवं अभिप्रेरण;

(v) समय की बचत;

III. **उपभोक्ताओं को लाभ:**

(i) सस्ती वस्तुएँ उपलब्ध होना;

(ii) अच्छी गुणवत्ता की प्रमाणित वस्तुएँ उपलब्ध होना;

IV. **राष्ट्र को लाभ:**

(i) देश का औद्योगिक विकास;

(ii) राष्ट्रीय उत्पादन एवं आय में वृद्धि;

(iii) श्रमिक आन्दोलन से होने वाली क्षति से बचाव;

(Iv) कर क्षमता में वृद्धि;

(v) रोजगार में वृद्धि ।

इस प्रकार व्यापारिक प्रबन्ध सभी क्षेत्रों में लाभकारी है ।

थॉम्पसन के अनुसार- "वैज्ञानिक प्रबन्ध" ने घाटे में चलने वाले उद्योगों को लाभ दिलाया जो लाभ में चल रहे थे उनका लाभ बढ़ाया तथा इस बात के पर्याप्त प्रमाण है कि उसका समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा ।